IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियो ं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन

निर्देशिका
श्रीमती तृप्ती सैनी
प्रोफेसर)

प्रस्तुतकर्त्री
गुड़िया मेघवाल (असिस्टेटं
(एम.एड. छात्रा)

1- सारांश– किसी भी राष्ट्र का विकास करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति साहित्य ने पर्यावरण शिक्षा की जड़ ` अधिक प्राचीन है। उपनिषदो ं में भी मानव एव ं प्रकृति की पारस्परिक निर्भरता का उल्लखे ा मिलता है। वर्तमान मे ं भोगवादी सभ्यता ने विकास का जो रूप प्रस्तुत किया है, उसी मे ं पर्यावरण के विनाश के बीज छिपे है। हमे ं अपनी आवश्यकताओ ं की पूर्ति के लिए प्रकृति का संरक्षण करने वाली तकनीकी अपनानी होगी। इसक ` लिए हमें वर्तमान शिक्षा के माध्यम स ` छात्रो ं में आवश्यक सचू ना के हस्तान्तरण के साथ ही उचित दृष्टिकोण एवं कौशलों का विकास करना है। पर्यावरण के शिक्षा का मकसद पर्यावरण संबंधी जागरूकता पैदा करना ही नहीं है, बल्कि पर्यावरण के अनुकूल कार्यवाही करना भी है। स्वस्थ पर्यावरण्एा ही मानव जीवन का आधार है, पर्यावरण की अनुपस्थिति मे ं जीवन की कल्पना असम्भव है। फलस्वरूप आज विश्व मे ं पर्यावरण शिक्षा का महत्व बढ़ गया है, जिसको भारत के सभी विद्यालयो ं मे ं विषय के रूप मे ं मान्यता दे दी। पर्यावरण शिक्षा तब तक प्रभावी नही हो सकती, जब तक इसके लिए प्रभावी व्यूह की रचना ना की जा सके। इसक ` लिए हमे ं लोगो ं को जागरूक करना होगा, जैस ` खेलकूद, नाटक, पर्यावरण चेतना रैली, वृक्षारोपण आदि आयाम या कार्यक्रम पर्यावरण के प्रति जागरूकता लान ` में सहायक होग ं ।

2- प्रस्तावना– औद्योगिक विकास की होड़ मे ं मनुष्य ने जाने अनजाने मे ं प्रकृति की सव ेदनशीलता को चुनौती दी है, मनुष्य ने प्रकृति के नियमो ं की अवहेलना की है। भारतीय सस्ंकृति के प्रमुख स्त्रोतों स ` स्पष्ट है कि सभ्यता के आदिकाल स ` ही इस

भारत भूमि मे ं प्रकृति के विविध प्रमुख अंगो ं को देवत्व की संज्ञा दी गई है। सम्भवतः इसका प्रधान कारण यह रहा है कि हमारे पव ूर्ज पर्यावरण की शुद्धता और महत्व का ` अच्छी तरह समझते थे, उनका विश्वास था कि पर्यावरण के संरक्षण से ही पर ूर्ण सृष्टि हरी भरी और पुष्ट

रहती है। अतः हमारे धर्मग्रन्थो ं मे ं सयू र्, अग्नि, जल तथा वायु आदि को देवत्व की प्रतिष्ठा दी गई। पृथ्वी को माता कहा गया है।

मानव ने पर्यावरण के बार ` मे ं शायद ही कभी इतनी चिन्ता की होगी, जितनी कि हमे ं वर्तमान मे ं देखने को मिलती है। आज हम पर्यावरण क्रान्ति के दौर से गुजर रहे है। पर्यावरण संतुलित करने मे ं पर्यावरण शिक्षा या जागरूकता अपना योगदान देती है, मनुष्य पर्यावरण का ही एक भाग है। उससे पृथक या स्वतंत्र नहीं है कि मनुष्य पारिस्थतिकी तंत्रो ं की अनेक भोजन श्रृंखलाओं का एक सुमेघ अंतजीव है। हम अपन ` पर्यावरण के साथ कैसा व्यवहार करते है, इसी पर हमारा भविष्य निर्भर है। जनसामान्य मे ं भी जो पर्यावरण के प्रति जागरूकता आयी है। वह तभी उपयोगी हो सकती है। जब प्रभावी कार्य रूप मे ं परिणित किया जा सकें पर्यावरण शिक्षा और पर्यावरण दोनो ं विकास के लिए आवश्यक है, क्योकि मनुष्य ने औद्योगिक विकास के उद्दश े य स ` प्राकृतिक ससं ाधनों का बडी निर्ममता स ` तथा अविवके पूर्ण ढ़गं स ` शोषण किया है। परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण परिस्थितिकीय असंतुलन की गंभीर समस्याओ ं ने मानव जाती के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। यह पर्यावरणीय समस्याये ं बढ़ी है, तो उनके साथ साथ उनक ` सबं ंध मे ं क्या किया जाना चाहिए इन सबके प्रति जागरूकता लाना आवश्यक है।

पर्यावरण शिक्षा स ` हमारा आशय पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति धारणा एवं दृष्टिकोण से है कि हम पर्यावरण के प्रति कितने सजग है। क्या आज का मानव पर्यावरण के प्रति सचेत है या उदासिन है, क्योकि जब तक उसे पर्यावरण संरक्षण के बारे मे ं ज्ञान नहीं होगा, तब तक हमारे मे ं जागरूकता उत्पन्न नही होगी। मोटे तौर पर पर्यावरण प्रबन्ध
एव ं नियोजन मे ं पर्यावरणीय जागरूकता की महत्वपू र्ा भूमिका रहती है।
पर्यावरण प्रभाव, मूल्यांकन मे ं भी उसकी जागरूकता का एक मुख्य कारण होता है। उदाहरण के लिए प्रत्येक नगरवासियों को पर्यावरण का विस्तृत ज्ञान होता है, किन्तु उसके प्रति जागरूकता कम होती है, जबकि एक किसान का पर्यावरण बोध, वर्षा, बाढ़, सुखा तथा भूमि की उर्वरा शक्ति से होता है, इसी कारण ग्रामीण लोग वनों को ही पर्यावरण मानते है, परन्तु इस ` ईंधन के रूप में भी काम मे ं लेते है, जिसस ` वायुमण्डल मे ं धुएँ स ` प्रदूषित हो रहा है, जिससे पर्यावरण बचान ` के लिए कई मुद्दे उठाये जा रहे है।

3- समस्या कथन– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन

4- अध्ययन का औचित्य– मनुष्य प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट कृति है। उसकी विशेषता है कि उसकी बुद्धि जिसके प्रभाव से उसने विश्व के शक्तिशाली व भयंकर जीवो ं पर विजय प्राप्त कर रखी है। अपनी सुख सम्पदा की व्यवस्था करते करते उसने वनस्पति को नष्ट कर दिया है। औद्योगिक इकाईयां विकसित होने से जलवायु प्रदूषित हो गया है। पर्यावरणीय गुणवत्ता मे ं तीव्रता स ` क्षती हो रही है। तथा असंतुलन एव ं पर्यावरण अवनयन स्थानीय स्तर पर सीमित न होकर विश्व स्तर

की सकं ल्पना केवल प्रशासनिक स्तर पर संभव नहीं है। यह जन भागीदारी द्वारा ही सभं ाव है और इसक` लिए पर्यावरणीय जनचेतना विकसित करनी होगी, पर्यावरणीय शिक्षा तभी अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अग्रसर होगी।

5- शोध के उद्दश्े य– शोध के उद्देश्य निम्न प्रकार स` है–

i. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में विभिन्न पर्यावरणीय घटको ं के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

ii. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में प्राकृतिक ससं ाधनों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

iii. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

6- शोध की परिकल्पना– शोध की परिकल्पना निम्न है–

i. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में पर्यावरणीय घटको ं के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

ii. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं मे ं पर्यावरणीय दौहन एव ं प्रकृति के प्रति जागरूकता मे ं सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। पपपप माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं मे ं पर्यावरणीय औपचारिक शिक्षा के प्रति जागरूकता मे ं सार्थकता अन्तर नही पाया जाता है।

7- शोध प्रविधियाँ– शोध प्रविधियाँ निम्न है–

i. जनसंख्या– प्रस्तुत अध्ययन मे ं जयपुर शहर के अंतर्गत विभिन्न माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओ ं को चुना गया है।

ii. न्यादर्श– प्रस्तुत शोध मे ं 120 छात्रो ं को लिया गया है। 30 छात्र–छात्राएँ सरकारी स्कूल से, 30 छात्र और 30 छात्राएँ निजी स्कूल से लिये गए है।

8- उपकरण– प्रस्तुत शोध मे ं छात्रो ं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता के अध्ययन में प्रश्नावली उपकरण को यप्रयसोग में लिया गया है।

9- शोध का परिसीमांकन– शोध का परिसीमांकन निम्न है–

i. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत् विद्यार्थियो ं की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

ii. यह शोध कार्य जयपुर जिले तक सीमित है। पपपप इस शोध कार्य में कुल 120 विद्यार्थियो ं को लिया गया है। माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयो ं के विद्यार्थियो ं का पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति जागरूकता को प्रदर्शित करती सारणी–

सारणी–4.1

क्र.सं.	विवरण	∓	ैव	.
1.	सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	55.26	4.58	0.93
2.	निजी विद्यालयों के विद्यार्थी			

उपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने स` ज्ञात होता है कि जयपुर के सरकारी व निजी विद्यार्थियों की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति जागरूकता के आंकड़े के आधार पर सरकारी विद्यालयो ं के विद्यार्थियो ं का मध्यमान 55.26 व प्रमाप विचलन 4.58 है तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 54.54 व प्रमाप विचलन 7.57 है तथा दोनो ं की सरकारी व निजी विद्यालयो ं के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो ं का मूल्य 0.93 है। यह मूल्य 0.01 विश्वास स्तर के मूल्य 2.61 से कम है।

अतः कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालयो ं एव ं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियो ं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता मे ं कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विश्लेषण– ग्राफ सखं या–4.1 स` ज्ञात होता है कि पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का सरकारी विद्यालयों के छात्रो ं का निजी विद्यालयों के छात्रो ं स` अधिक है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि पर्यावरण शिक्षा परीक्षण के ज्ञान के उपयोग के प्रति निजी विद्यालयो ं के छात्र कम जागरूक है।

सुझाव– पर्यावरण जागरूकता के विकास मे ं शिक्षक की बहुत महत्वपू र्ा भूमिका होती है, क्योकि हम जानते है कि शिक्ष किसी भी राष्ट्र के भावी कर्णधार को तैयार करते है। शिक्षक विद्यार्थियों को पर्यावरण सबं ंधी जानकारी देकर, पाठ्य सहगामी क्रियाओ ं का आयोजन (जैसे बागवानी, आस–पास की सफाई, रैली, पोस्टर प्रदर्शनी, शैक्षिक भ्रमण, वाद–विवाद प्रतियोगिता आदि) कराकर पर्यावरण के प्रति जागरूक कर सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कपिल, एच के : "अुनसंधान विधियाँ व्यवहार परक विज्ञानों में," भार्गव बुक हाउस, आगरा, 2007

कुमार, ए : "शैक्षिक शोध की पद्धतियाँ," शशी गाइडस यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन जयपुर, 2008

कौल, लोकेश : "मैथोडोलॉजी ऑफ एजुकेशन रिसर्च," विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2000

गेरेट, एच : "शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी प्रयोग," कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली

गुड व स्केट्स : "मैथडस ऑफ रिसर्च," न्युयार्क न्यू एप्लीटन सैचुरी क्राफ्ट, 1964

गोयल, के. बी : "सांख्यिकी विधियाँ," अजमेरा बुक कम्पनी जयपुर, 1981

गौड़, डॉ. अश्विनी कुमार : "शोध प्रबन्ध पर्यावरणीय विषयक," क्रियात्मक खण्ड प्रथम, पर्यावरण विभाग राजस्थान, 2009

चौधरी एस. सिंह : "शोध प्रोजक्ट, क्रियात्मक अनुसंधान खण्ड प्रथम," पर्यावरण विभाग, राजस्थान, 1990"

पाण्डेय, के. पी : "शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान," अभिताभ प्रकाशन, मेरठ, 1995

पंवार, एल के : "राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान," शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर, 1989

बेस्ट, जॉन डब्ल्यु : "रिसर्च इन एजुकेशन," प्रैट्रिस हॉल इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1963

मंगल, डॉ. अशु : "शैक्षिक अनुसंधान की गतिधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी," रूधा प्रकाशन, आगरा, 2005